PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume - 9 | Issue - 8 | August - 2020 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

चंपारण सत्याग्रह में गांधी जी के शैक्षणिक काय

KEY WORDS:

राकेश कुमार

ग्राम– विटुहाह पो0–सोठीगाँव जिला–मधुबनी

चम्पारण का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में विशेष महत्त्व है। गांधी जी द्वारा किया गया है। गांधी जी द्वारा किया गया चम्पारण अभियान वस्तुतः भारत के नवेदित राष्ट्रवाद का पहला सफल प्रयोग था, जो गांधी के सफलता नतृत्व में अहिंसा– सत्य पर आधारित सत्याग्राह के प्रयोग, उनके रचनात्मक कार्यक्रम एवं शोषित–दजित जन समूहों के जागरण पर बल देने के कारण सर्वथा अद्वितीय रहा। गाधीजी द्वारा प्रतिपादित एवं संचालित यह अंदोलन न सिर्फ ब्रितानी आर्थिक शोषकों अपितु भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों, अशिक्षा एवं असमानता के विरूद्ध भी संघर्ष था। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार, ''चंपारण में जो कुछ हुआ। भारत आज विदेशी राज के मुक्त है।'' गांधी जी का चम्पारण अभियान मुलतः मानवतावादी प्रयत्न था, जिसने भारत के राष्ट्रीयता के जागरण को अनुप्रेरित कर वर्षो से त्रस्त शोषित और सताये हुए चम्पारण के रैयतों और किसानों के मन में नवजागरण का कार्य किया एवं नवचेतना का विकास किया।

हिमालय की गोद में समाये उत्तर बिहार के तिरहुत प्रमंडल का प्रमुख जिला चम्पारण अथावा चम्पाफूलों की स्थिति के रूप में प्रसिद्ध था।[2] यह जिला कभी राजा जनक के काल की समृद्धि और वैभव अतीत को स्मृत कराता है तो कभी यज्ञवल्क्य, गौतम और कणाद जैसे ऋषियों की सभा स्थली के रूप में जाना जाता है। यह चम्पारण कभी लिच्छिवियों के प्रख्यात गणतंत्र के अंतर्गत था। चम्पारण में कई स्थलों पर (लोरिया, नंदनगढ, अरेराज) अशोक के स्तंभ आज भी उसके धम्म एवं नीति के संदेशवाहक, सहिष्णुता एवं मानवीय के प्रतीक के रूप में खड़े हैं।[3]

आधुनिक काल में अंग्रेजी राज के स्थापना के बाद यह धरती अंग्रेजी राज के सिपहसलारों, व्यापारिकयों एवं निलहे पदाधिकारियों के दमन, अतयाचार एवं शोषण के शिकंजे में फंसकर रैयतों के कराहने की क्रंदन आजाज की गवाह भी बनी। चम्पारण की धरती के किसानों, रैयतों और गरीबों पर ढ़ाये गये जुल्म एवं अत्याचार के विरूद्ध चम्पारण आंदोलन को सफल करने का संकल्प भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के पुरोधा एवं नायक महात्मा गांधी ने लिया जिसके परिणाम स्वरूप गोरी सरकार को अपनी सोच में परिवर्तन करना पड़ा

भारत में कंपनी राज स्थापित होने के उपरांत अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के कारण नील के अमेरिकी स्रोत बंद होने के फलस्वरूप युरोप में नील की अप्रत्याशित मांग को पूरा करने लिए बंगाल एवं बिहार में नील की कई कोठियों स्थापित की गई।[4] 1830 तक एक सरकारी विवरण के अनुसार बंगाल प्रेसिडेंसी में लगभग 1000 नील की कोटियाँ थी। तिरहुत में 1803 तक 25 से कम कोठियाँ नहीं खुली। नील की कोठियां शाहाबाद, पूर्णिया,भागलपुर एवं संथालपरगणा जिलों में भी खोली गई।[5] नील की खेती रैयतों के शोषण का जरिया बन गया। चंपारण में नील की खेती के लिए तीन कठिया प्रणाली प्रचलित थी। इसके अन्तर्गत रैयत को प्रति बीघा खेत में तीन कठृठे में नील उपजाना पड़ता था। रैयतों को अपने खेत में नील उपजाने के लिए अनेक तरह की धमकी देना, जबर्दस्ती, बहुत कम मजदूरी और कभी–कभी बिना मजदूरी पर भी काम करना, किसी कारण से नील नहीं उपजा सके तो जुर्माना भरना आदि इस अत्याचारी एवं कठोर प्रथा की कुछ विशेषतायें थी।[6]

लखनऊ में कांग्रेसी अधिवेशन 1916 ई0 में राजकुमार शुक्ल के आमंत्रण पर गांधी जी ने चंपारण आना स्वीकार किया। चंपारण आकर उन्होंने रैयतों पर अत्याचार के विरूद्ध निहलों से संघर्ष कर रैयतों को राहत दिलाया।

चंपारण के इस सत्याग्रह में गांधी जी ने न केवल रैयतों को निलहों के अत्याचार से मुक्ति दिलाया, वरण उन्होने यहाँ के स्थानीय रैयतों एवं गरीब किसानों की शिक्षा,स्वास्थय, गरीबी और अस्मपृश्यता संबंधी समस्याओं के निराकरण का भी प्रयास किया। गांधी जी ने भारतीय समाज में अंतर्निहित बुराइयों के लिए निम्नवर्गीय किसानों एवं रैयतों की अशिक्षा तथा अज्ञानता को प्रमुख कारण मानते हुए उनके शैक्षणिक उन्नयन के लिए अनेक रचनात्मक कार्यक्रम शुरू किया जिसमें उन्होंने केरल, महाराष्ट्र, गुजरात आदि के सामाजिक कार्यकर्ताओं की सहायता ली।

गांधी जी ने अपने शिक्षा दर्शन के अनुसार चम्पारण में शैक्षणिक व्यवस्था को आकार देने का प्रयास किया। गांधीजी की शिक्षा दर्शन एवं शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी 1911ई0 से 1914ई0 तक उनके द्वारा दक्षिण अफ्रिका में टालस्टाय फॉर्म में दिये गये बेसिक शिक्षा की व्यवस्था से मिलती है। 1915ई0 में सावरमती आश्रम में उन्होंने इस प्रयोग को जारी रखा। गांधीजी ने अपने शैक्षणिक दर्शन को चम्पारण सत्याग्रह के दौरान भी कार्यरूप में परिणत करने का प्रयास किया।

गांधीजी के अनुसार केवल साक्षरता या पढ़ने–लिखने की क्षमता मात्र ही शिक्षा नहीं है, बल्कि ये तो केवल शिक्षा को प्राप्त करने के ढ़ंग है। शिक्षा, शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा के विकास से संबंधित होनी चाहिए। इसका उद्येश्य व्यक्ति को उसके उच्चतम लक्ष्य की अनुभूति कराना तथा उसे स्वयं में सर्वोत्तम बनने की प्रेरणा देना होना चाहिए। शिक्षा समस्त स्त्री एवं पुरूषों के लिए आवश्यक है। गांधीजी शिक्षा के वर्तमान माध्यम से संतुष्ट नहीं थे। यह उनकी दृष्टि में विदेशी संस्कृति पर आधारित एक विदेशी माध्यम था। शिक्षा का यह माध्यम भारतीय संस्कृति के विरूद्ध तथा केवल सैद्धान्तिक मात्रा ही था।

गांधीजी के अनुसार प्राथमिक शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य होनी चाहिए। प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य है, बालक को उसके विकास के प्रथम चरण में दी जाने वाली ऐसी शिक्षा जो उसके भावी जीवन की आधारशिला बने। प्राथमिक शिक्षा में शारीरिक प्रशिक्षण, स्वच्छता तथा स्वाबलंबन पर जोर दिया जाना चाहिए, ऐसी शिक्षा में इतिहास तथा भूगोल का ज्ञान एवं स्वच्छता, शरीर विज्ञान तथा पालन–पोषण के मूल सिद्धान्तों का अध्ययन भी शामिल होगा। यह कताई एवं बुनाई आदि कलाओं के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा होगी। यह बच्चों में शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक क्षमता की वृद्धि करेगी। शिक्षा की यह प्रणाली मैट्रिकुलेशन स्तर तक, अंग्रेजी के बिना अपनाई जानी चाहिए।

गांधीजी के अनुसार उच्चतर शिक्षा राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार होनी चाहिए, उच्चतर शिक्षा संस्थाओं को उद्योग तथा व्यापार की आवश्यकताओं के अनुसार, योग्य कार्मिक या कर्मचारी तैयार करने चाहिए। ये शिक्षा संस्थान आत्म निर्भर होने चाहिए एवं इन्हें राज्य द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। उच्चतर शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं होनी चाहिए। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का मतलब है। **"By education, I mean an alround drawing out of the best in child and man-body, mind and sprit."**

वस्तुतः अज्ञानता मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। अपने स्वाभाविक मानवप्रेम से अनुप्रेरित तथा बिहार में अपने अनुभवों के प्रकाश में गांधीजी की यह पक्की धारणा हो गई कि (उन्हीं के शब्दों)'' इस हेतु उन्होंने सोचा कि गांवों में प्रवेश करना तथा वहाँ प्राथमिक विद्यालय खोलना आवश्यक था।

गांधीजी के साथ आई हुई महिला एवं पुरूषों की टोली बिहार में समाज कल्याण कार्य छह महीनों तक करने के लिए आई थी। इन लोगों को गांधीजी का स्पष्ट आदेश था कि वे प्लान्टरों के विरूद्ध शिकायतों तथा राजनीति से कोई संबंध नही रखेंगें इन लोगो को विस्मयकारी निष्ठा के साथ इन आदेशों का पालन किया।[10]

14 नवम्बर,1917 को गांधीजी ने चम्पारण के बड़हरवा लखनसेन नामक गाँव में पहला स्कूल स्थापित किया यह गाँव बेतिया राज की जमींदारी में 20 मील पूरब स्थित है। गाँव के एक उदारचेता व्यक्ति शिवगुलाम लाल ने स्कूल के हेतु अपना घर दान कर दिया था एवं अन्य प्रकार से भी सहायता किी। गांधीजी ने मोतिहारी के कलक्टर श्री मेरीमेन को इस आशय का पत्र लिखा (14 नवम्बर 1917):–

''यहाँ जो सब काम किए जा रहे हैं उनसे आपको अवगत रहना उचित होगा। एक खास बस्ती में स्कूल खोलने का आमंत्रण तथा उसके हेतु एक बना– बनाया मकान मिलने पर मैंने ढाका के समीपवर्ती ग्राम बड़हरवा लखनसेन नामक गाँव में स्कूल आज खोला है। वहाँ अपने सहकर्मियों में सर्वाधिक सुयोग्य शिक्षकों को रख दिया है। इन शिक्षकों के नाम हैं– श्री बवन गोखले उनकी पत्नी श्रीमती अवंतिका बाई गोखले। ये दोनों बम्बई से आए हैं। श्री गोखले यूरोप में प्रशिक्षण प्राप्त एक प्रख्यात इंजीनियर हैं। उन्हें आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। श्रीतमी गोखले बम्बई में शिक्षा प्रसार का कार्य करती थीं। इनका काम क्या होगा, इसका विवरण मैं दे चुका हूँ। मैं आशा करता हूँ कि यदि संभव हुआ तो विभिन्न कोठियों की सहायता से ऐसे ही स्कूल ग्राम पिपरा तथा एक ग्राम तुरकौलिया एवं ग्राम बेलवा में खोले जाएंगे। यह कार्य अभी प्रयोग क तौर पर किया जा रहा है। इसलिए मैं 5 से अधिक स्कूल अभी नहीं खोलना चाहता, जब तक कि निश्चित परिणाम दृष्टिगत नहीं होते। मेरी आशा है कि इस प्रयोग कार्य में स्थानीय अधिकारियों का सहयोग मुझे मिलेगा। यह कार्य काफी कठिन है किन्तु इसके महत्त्वपूर्ण परिणाम निकल सकते हैं''[11]

ग्रामीण स्कूलों में शिक्षा स्वरूप एवं शिक्षा देने के तरीके को गांधी जी ने श्री मरीमेन को एक अन्य पत्र में यह स्पष्ट किया था (19 नम्बर, 1917):– हमने जो स्कूल खोले हैं, उनमें 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों को ही भर्ती करके सर्वतोमुखी शिक्षा दी जाए अर्थात् हिन्दी और उर्दू एवं इन माध्यमों से हिसाब, इतिहास, भूगोल का कुछ ज्ञान एवं विज्ञान के सरल सिद्धान्तों का अभिज्ञान दिया जाए। इनके अतिरिक्त कुछ औद्योगिक प्रशिक्षण भी उन्हें मिले। अभी कोई सुनिर्धारित पाठ्यक्रम निर्धारित नहीं किया गया है, क्योंकि मैंने जिस काम को शुरू किया है वह अपने ढंग का पहला है। आपकी वर्तमान शिक्षा प्रणाली से मैं घबड़ाता हूँ। उससे बच्चों के नैतिक एवं मानसिक विकास होने के बदले और भी उन्हें कुंठित किया जाता है। अपने प्रयोग में वर्तमान शिखा प्रणाली की विशेषताओं को ग्रहण करके उसकी जो बुराईयां है उनसे बचने का प्रयत्न करूँगा। मुख्य उद्येश्य यह है कि बच्चों को सुसंस्कृत एवं अनिन्ध नैतिक आचरण के लोगों के सम्पर्क में लाया जाए। मेरी दृष्टि में शिक्षा का सही अर्थ यही है। किताबी ज्ञान इस उद्येश्य की प्राप्ति के लिए साधन–मात्र है। औद्योगिक प्रशिक्षण की व्यवस्था इस आशय से की गई है कि हमारी पाठशालाओं में जो लड़के–लड़कियाँ आवें, उन्हें यह प्रशिक्षण आजीविका के अतिरिक्त साधन प्रदान कर सके। हमारा यह उद्येश्य नहीं है शिक्षा पूरी करने पर ये बच्चे अपनी परम्परागत आजीविका अर्थात् खेती करना छोड़ दें बल्कि यह कि पाठशालाओं में जो जानकारी वे हासिल करें उनका उपयोग खेती एवं कृषि जीवन के उन्नयन में लगावें। हमारे शिक्षक वयस्क लोगों के जीवन के उन्नयन करने का भी प्रयत्न करेंगे।[12]

20 नवम्बर की भीटरवा नामक गाँव में गाँधीजी ने एक दूसरा स्कूल खोला। यह गाँव बेतिया से लगभग 40 मील उत्तर–पश्चिम नेपाल की तराई में स्थित है। इस स्कूल तथा प्रभावी चिकित्सा कार्य की आवश्यकता के संबंध में गाँधीजी ने श्री मेरीमेन को 22 नवम्बर को इस आशय का पत्र दियाः

''पिछले मंगलवार को भीटहरवा गया और वहाँ एक स्कूल खोला! श्री सोमन (सदाशिव लक्ष्मण सोमन) बेलगाँव के सार्वजनिक कार्यकर्त्ता एवं बी0एल0, एल0एल0बी0 को उसकी देखरेख के लिए नियुक्त किया गया है। श्री बालकृष्ण योगेश्वर पुरोहित उनकी सहायता करेंगे। श्री पुरोहित गुजरात के एक तरूण कार्यकर्ता हैं। मेरी पत्नी 24 तारीख को उनके साथ सहयोग करने को वहाँ जाएगी। वह मुख्यतः स्त्रियों के मध्य काम करेगी।[13]

मधुबन के सम्पन्न व्यापारी सेठ घनश्याम दास की उदारता से 17 जनवरी 1918 को उसके घर में एक पाठशाला खोली गई। इस स्कूल का संचालन श्री नरहरी द्वारिका दास पारीख तथा श्री महादेव हरिभाई देसाई कर रहे थे।''

जन कल्याण के हेतु इन समर्पित लोगों की निष्ठापूर्ण से ये स्कूल वस्तुतः आश्रम बन गए थे। जनता के मन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। राजेन्द्र बाबू ने अपने व्यक्तिगत अनुभव से इस संदर्भ में लिखा है'' ग्रामीण स्त्रियों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। महिला स्वयं सेविकाएँ

उनके घरों में जाती है और उनका विश्वास प्राप्त करती हैं। वयस्क महिलाएँ भी आश्रम में आती थी और पर्दा की कठोरता धीरे–धीरे कम होने लगी थी। स्त्रियाँ पहले से अधिक मुक्त हवा में सांस ले रही हो ऐसा लगता था। में (यथा रामायण पाठ जब तक हुआ करता था, आश्रम की प्रार्थना आदि में) भाग लेने लगी थी।''[18]

स्वयं सेवको के पहला जत्था के महाराष्ट्र लौट जाने के उपरान्त उसी क्षेत्र से दो और स्वयं सेबक चम्पारण आए। इनके नाम क्रमशः थेः नारायण तम्माजी कटगरे उर्फ कुण्डलिक और एकनाथ बासुदेव खिर्रे। इन दोनों ने पर्याप्त साहस के साथ भीटहरवा पाठशाला में काम शुरू किया। सरकार को कुण्डलिक का यहाँ रहन सहन नहीं हुआ और उसे भारत रक्षा कानून के अंतर्गत चम्पारण से हटा दिया गया। मधुबन में काम करने वाले पहले जत्था के चले जाने के बाद स्कूल श्री खिर्रे और श्यामदेव नारायण ने चलता रहा। दोनों ने वहाँ कुछ महीनों तक रह कर काम किया।

ठस प्रकार गाँधी जी ने चंपारण सत्याग्रह के दौरान अपनी शिक्षा दर्शन को कार्यरूप में परिणत करने का प्रयत्न किया ताकि लोगों की अज्ञानता दूर हो सके, उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास हो सके और अंततः उनमें राष्ट्रवाद की भावना पनप सकेण

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ राजेन्द्र प्रसाद, सत्याग्रह इन चंपारण, द्वितीय संस्करण, सितंबर 1949,पृ0–10
2. च्प्ब् त्वल बैंनकींतलए क्पेजतपबज,ब्ंमजजमत व िंउचंतंदए ठपींत. च्ंजदं. 1960एच्.55
3. डॉ के0के0दत्त, बिहार में स्वातंत्रता आन्दोलन का इतिकास, खंड–1, द्वितीय संस्करण 1998,पृ–180
4. डॉ0 अजित कुमार, बिहार में अंग्रेजी राज और स्वतंत्रता आन्दोलन (1764–1947) उषा प्रकाशन, पृ0–97
5. डॉ0 के0के0 दत्त, पूर्वोक्त पृ0–182
6. प्रो0 कौलेश्वर राय, बिहार का इतिहास, किताब महल, चतुर्थ संस्कारण 2013, पृ0–428
7. मेहनदास करमचंद गाँधी, एक आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोग, पृ0–97
8. उपर्युक्त 9. उपर्युक्त 10. उपर्युक्त 11. डॉ के0के0दत्त, पूर्वोक्त पृ0–287–288
12. उपर्युक्त 13. उपर्युक्त14. प्रो0 कौलेश्वर राय, पूर्वोक्त पृ0– 440
15. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, पूर्वोक्त पृ0–187
16 डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गाँधी एंड बिहार, पृ0–32